



किसान मेला-2025

15-17 फरवरी, 2025

जलवायु अनुकूल कृषि से विकसित भारत की ओर



कार्यक्रम

15 फरवरी, 2025 (शनिवार) : पंजीकरण, उद्घाटन एवं प्रदर्शनी
 16 फरवरी, 2025 (रविवार) : प्रदर्शनी/ गोष्ठी/ सोमिनार/ प्रक्षेत्र-भ्रमण
 17 फरवरी, 2025 (सोमवार) : प्रदर्शनी, गोष्ठी, मूल्यांकन, समापन समारोह

आमंत्रण

कृषि एवं कृषि के विभिन्न आयामों से सम्बद्धित व्यक्तियों, संस्थानों, कृषक संगठनों, उत्पादकों एवं विपणन संघों को इस किसान मेले में स्टॉल प्रदर्शन, निरूपण एवं सहभागिता हेतु विश्वविद्यालय परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है।

आयोजक :

प्रसार शिक्षा निदेशालय

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर-848 125 (बिहार)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

जलवायु परिवर्तन आज एक सच्चाई है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, गहन कृषि और अत्यधिक मानवीय गतिविधियाँ ही वे प्रमुख प्रभावकारी कारक हैं जिसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन का दंश प्रत्यक्ष अनुभव किया जा रहा है। हम अपने परम्परागत प्रकृति आधारित जीवन पद्धति से दूर होकर आधुनिकता की ओर बढ़ने में लगे हैं जिसके दुष्परिणामों से ही हमारा सम्पूर्ण प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो गया है। जलवायु परिवर्तन ने निश्चित रूप से हमारी कृषि पर गंभीर प्रभाव डाला है जिससे खाद्य सुरक्षा, किसानों की आजीविका और ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है क्योंकि इन बदली हुई परिस्थितियों के कारण जलवायु विशेष क्षेत्र में लिए कृषि उत्पादन हेतु उपयुक्त फसलों के चयन और जलवायु अनुकूल कृषि उत्पादन तकनीकों के अनुप्रयोग से ही संभव हो पाता है। जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों के फलस्वरूप तापमान में अनियमित उतार चढ़ाव देखा जा रहा है जिससे अवांछनीय गर्म व ठंडी हवाओं के कारण फसलों का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है जिससे फसल उत्पादन सीमित हो रहा है।

भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल की है, जिसे सुनिश्चित करने के हेतु, उपलब्धता, पहुंच, उपयोग और स्थिरता ही चार प्रमुख स्तंभ रहे हैं। हालाँकि, हमारी उत्पादन प्रणाली अभी भी अन्न प्रधान होते हुए, संसाधनों और क्षेत्र विशेष पर ही आधारित है। हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में, कुपोषण और गरीबी के अलावा, जलवायु परिवर्तन गंभीर चिंता का प्रमुख विषय है। अतः विकसित भारत के अभियान में टिकाऊ और लाभकारी कृषि उत्पादन हेतु, जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकियों में समाहित कृषि उत्पादन विधाओं का अनुप्रयोग एक प्रभावी एवं समाधानकारी उपाय साबित हो सकता है।

“विकसित भारत @ 2047” का आह्वान 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के हमारे सामूहिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। 2047 तक विकसित स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI) में छह गुना वृद्धि की आवश्यकता है, जो वास्तव एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। हमारे देश की लगभग आधी आबादी जीविकोपार्जन के लिए खेती पर आधारित है, अधिकांश कृषक लघु और सीमान्त कोटि के हैं और कृषि सकल घरेलू उत्पाद में इनका योगदान मामूली ही है। सतत विकास के लिए किसानों की आय में न्यायसंगत सुधार आवश्यक है। यह कदम “विकसित भारत” अभियान में कारगर होगा क्योंकि विकसित भारत का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीकों और आकर्षक बाजार तक पहुंच प्रदान करना है, जिससे उत्कृष्ट उपभोक्ता प्रणाली का विकास के साथ उच्च मूल्य वाली कृषि का विविधीकरण संभव हो और किसानों को स्थायी आजीविका की गारण्टी सुनिश्चित हो।

जलवायु अनुकूल कृषिकरण के तहत मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियों के साथ-साथ बेहतर सिंचाई तकनीकों (ड्रिप सिंचाई और जल संचयन), मौसम प्रतिरोधी फसल प्रभेदों (सूखा प्रतिरोधी, बाढ़ प्रतिरोधी, गर्म-सहिष्णु फसलों में अनुसंधान और विकास) की खेती से जलवायु परिवर्तन का अनुकूलन प्राप्त किया जा सकता है। फसल चक्र, कृषि वानिकी और जैविक खेती जैसी टिकाऊ कृषि प्रणालियों, यथा उपयुक्त कृषि तकनीकों (प्रिसिजन एग्रीकल्चर), डिजिटल कृषि, मौसम पूर्वानुमान प्रणाली और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली जैसी नवीन कृषि उपयोगी तकनीकियों, किसानों को लाभदायक उत्पादन प्राप्त करने में सहायक हो सकती हैं। जलवायु-स्मार्ट कृषि संबंधी तकनीक यथा; शून्य जुताई, वैकल्पिक रूप से नमी संचयन करना और सुखाना, ऊँचे मेड़ रेज्ड बेड पर रोपण, लेजर लेवलर द्वारा समतलीकरण, लिफ्ट कलर चार्ट (एलसीसी) और फसल प्रणाली अनुकूलन के साथ-साथ कम्प्यूटरीकृत पोषक तत्व अध्ययन जैसे आधुनिक उपकरण यथा; ग्रीन सीकर, न्यूट्रिएंट एक्सपर्ट (एन . इ.), जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों को कम करने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है। मिट्टी की उर्वरता, जैव विविधता, अंतरफसली कृषि पद्धति और कृषि वानिकी को अपनाने से जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को कम करने में मदद मिलती है, पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बढ़ता है और आय के विविध स्रोतों का सृजन होता है।

कृषि में जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को निष्प्रभावी करने और आजादी के 100 वर्षों में विकसित भारत के लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में जलवायु अनुकूल कृषि तकनीकों के माध्यम से उचित विकल्पों के व्यापक प्रचार प्रसार के उद्देश्य ही कृषि क्षेत्र के विभिन्न हितधारकों के बीच जागरूकता सृजन हेतु, विश्वविद्यालय ने इस विषय पर किसान मेला आयोजित करने की योजना बनाई है।

किसान मेले का उद्देश्य

भारत में कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों की स्थापना, किसानों के बीच कृषि शिक्षा, अनुसंधान और कृषि प्रौद्योगिकियों के विस्तार को प्रदर्शित करने के प्रमुख उद्देश्य से की गयी थी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, वैज्ञानिकों, उत्पादकों, सेवा प्रदाताओं और किसानों को शामिल करते हुए विश्वविद्यालय परिसर में एक वार्षिक किसान मेला आयोजित करता है। इस कड़ी में वर्ष 2025 में दिनांक 15-17 फरवरी के दौरान इसका आयोजन जलवायु अनुकूल कृषि से विकसित भारत की ओर विषय पर किया जा रहा है।

किसान मेले के मुख्य आकर्षण:-

- कृषि संबंधी कौशल का प्रसार
- कृषि संबंधी ज्ञान का प्रसार
- उद्यानिक एवं पशु-पक्षी प्रदर्शनी
- मृदा जांच परीक्षण सुविधाएं
- पादप स्वास्थ्य क्लिनिक सेवा
- डिजिटल कृषि प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन।
- जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक का प्रसार
- कृषि क्षेत्रों में उत्पादकों, सेवा प्रदाताओं, वित्तीय संस्थाओं और बैंकों के द्वारा प्रदर्शनी
- बिक्री के लिए फल/फूल/वन नर्सरी पौधे आदि उपलब्ध
- विभिन्न खाद्य उत्पादों, श्रीअन्न फसलों, फूल, फल, मूल्य संवर्धित वस्तुओं आदि की प्रदर्शनी।
- प्रश्रोत्तरी/सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।
- समसामयिक खेती/संबद्ध मुद्दों पर चर्चा।
- किसानों के स्टॉल के सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए पुरस्कार।
- ड्रोन के प्रदर्शन के साथ-साथ सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में ड्रोन तकनीक के उपयोग पर चर्चा।
- बीज, मशीनरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन और कृषि के अन्य घटकों की बिक्री।
- कृषि उपकरणों / मशीनों के उत्पादकों, विभिन्न कृषि सेवाओं और अन्य सरकारी सेवाओं सहित विभिन्न राज्यों की

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

कृषि शिक्षा एवं शोध की जन्म स्थली पूसा में स्थित, स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद के नाम पर स्थापित, यह विश्वविद्यालय स्थापना काल से ही कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दे रहा है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) अपने विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों, अनुसंधान एवं शिक्षण संस्थानों के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा कृषि के विकास एवं प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वाहन में सदैव तत्पर है।

प्रदर्शकों के लिए उपलब्ध सुविधाएँ

- प्रत्येक प्रदर्शनी स्टॉल पर 2 मेजें, 2 कुर्सियाँ और आवश्यक बिजली की आपूर्ति उपलब्ध होगी।
- ऊपर वर्णित सुविधाओं एवं दरों में परिवर्तन, छूट एवं रियायत का सर्वाधिकार विश्वविद्यालय मेला प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

स्टॉल

इस मेले में प्रदर्शनी हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निम्न प्रकार के स्टॉल उपलब्ध कराये जायेंगे:
तीन तरफ से घिरे आच्छादित स्टॉल।

आकार 15'X12'X10' रू. 8,000.00 (आठ हजार रुपये) मात्र।

विज्ञापन अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में, और साथ ही साथ प्रिंट करने के लिए तैयार प्रारूप में सॉफ्ट कॉपी भेजी जा सकती है। इसका भुगतान “Kisan Mela-RPCA, Pusa” के नाम पंजाब नेशनल बैंक, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा A/C No. 4512000100027244 (IFSC Code: PUNB 0451200) को नगद/डिमांड ड्राफ्ट /यू.पी.आई. से किया जा सकता है। राशि भुगतान करने के पश्चात ई-मेल: amit @rpcu.ac.in; dee@rpcu.ac.in; ratnesh@rpcu.ac.in पर सूचित करें।

मेला स्मारिका के लिए विज्ञापन का आकार एवं दरें।

| क्रम सं. | आकार | (दर रु.) |
|----------|-------------------------|-------------|
| 1. | बैकसाइड फुल रंगीन पृष्ठ | 1,00,000.00 |
| 2. | इनसाइड कवर रंगीन पृष्ठ | 75,000.00 |
| 3. | आधा रंगीन पृष्ठ | 50,000.00 |
| 4. | चौथाई रंगीन पृष्ठ | 25,000.00 |

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा कैसे पहुँचें।

| | | |
|--|---|---|
| समस्तीपुर रेलवे स्टेशन सड़क मार्ग से 20 कि.मी. | मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन सड़क मार्ग से 40 कि.मी. | दरभंगा हवाई अड्डा सड़क मार्ग से 50 कि.मी. |
| | | |
| खुदौरामबोस पूसा रेलवे स्टेशन से 09 कि.मी. | | पटना हवाई अड्डा सड़क मार्ग से 100 कि.मी. |

UPI ID: 943163266001pnb
BHIM LPI
Pay at UPI-Online using any UPI app
G*PAY APP
MobiKwik

सम्पर्क सूत्र:

डॉ. रमेश कुमार झा

प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्र. शि. नि.
आयोजन सचिव, किसान मेला-2025
रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा
मो.- 9430804115, 7759935426
ई-मेल: ratnesh@rpcu.ac.in

डॉ. मयंक राय

निदेशक प्रसार शिक्षा
रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा
मो.- 9436336008
ई-मेल: dee@rpcu.ac.in

डॉ. आर. के. तिवारी

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली
सह-आयोजन सचिव,
मो.-7295046855

डॉ. एम. एल. मीणा

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान,
कृषि विज्ञान केन्द्र, तुर्की
सह-आयोजन सचिव
मो.-9414856397

डॉ. बिनीता सतपथी

सह-प्राध्यापक,
प्रसार शिक्षा निदेशालय
सह-आयोजन सचिव
मो.-7978505027

डॉ. फूलचंद

सह-प्राध्यापक
प्रसार शिक्षा निदेशालय
सह-आयोजन सचिव
मो.-9661540698



Kisan Mela-2025

15-17 February, 2025

**Towards Viksit Bharat through
Climate Resilient Agriculture**



Programme

15 February, 2025 (Saturday) - Registration, Inauguration and Exhibition
16 February, 2025 (Sunday) - Exhibition, Gosthi, Seminar and Field visits
17 February, 2025 (Monday) - Exhibition, Gosthi, Evaluation and Valedictory programme

Invitation

Individuals & organizations related to Agriculture and allied vocations, farmers, institutions, government & non-government organization, producers & marketing federations are cordially invited to participate, attend and cooperate in exhibition of Kisan Mela-2025.

Organized by:

Directorate of Extension Education
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa
Samastipur- 848125 (Bihar)

Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Climate change is now a reality. Indiscriminate exploitation of natural resources, intensive agriculture and excessive anthropogenic activities are the major driving forces behind the perceptible change in climatic conditions. As we move away from the traditional system towards modernity, human activity has increased, which eventually causes the natural ecosystem to become unbalanced. Undoubtedly, climate change has produced serious impact on agriculture, affecting food security, farmer livelihoods, and rural economies as agricultural production is carried out through the selection of crops suitable for the climate of a particular region and application of proper cultivation techniques. Uncertain and extreme weather events like heat waves, cold waves, droughts and floods, and their regular occurrence can limit crop yield substantially.

Availability, accessibility, utilization and stability are the four major pillars that have ensured self-sufficiency in food production. However, the production system is still resource-intensive, regionally biased, and centered on cereals. Apart from malnutrition and poverty, the severe climate change has been a major issue of concern across different regions of our country. Thus, climate-resilient agriculture can be a potential driving force for achieving a developed India by incorporating climate-proofing interventions and technologies for sustainable and profitable production system.

The call for "Vikshit Bharat@2047" signifies our collective vision to elevate India into a developed nation by 2047. A six-fold increase in per capita Gross National Income (GNI) is required to attain the developed status by 2047, which is indeed a difficult undertaking. Improving farmers' income is essential for equitable and sustainable development, as roughly half of the working population of our country is employed in farming, with small average holding sizes and agriculture making up a modest part of the GDP. The major objective of "Vikshit Bharat" is providing access to modern technologies and most lucrative market along with diversification of a high-value agriculture with emerging consumption pattern, and help the farmers substantially for sustainable livelihood.

Adaptation to climate change can be achieved by cultivation of weather resilient crops (research and development into drought-resistant, flood-resistant, or heat-tolerant crops) with improved irrigation techniques (drip irrigation and rainwater harvesting) along with soil health management strategies (sustainable practices like crop rotation, agroforestry and organic farming). Innovative technologies like precision agriculture, digital agriculture, advanced weather forecasting system and early warning systems can assist the farmers to achieve profitable production. Climate-smart agronomic interventions like zero tillage, alternate wetting and drying (AWD), raised bed planting, laser land levelling, SSNM, leaf colour chart (LCC) and cropping system optimization along with computerized decision support tools like Green Seeker, Nutrient Expert (NE) are also contributing towards mitigating the negative impacts of climate change. By enhancing soil fertility and biodiversity, adopting intercropping and agroforestry practices help in reducing climate risks, increases ecosystem resilience, and diversifies revenue streams also.

To address the negative impacts of climate change in agriculture, and mitigation options through climate resilient interventions towards "Vikshit Bharat" within 100 years of independence, the University has planned to organize Kisan Mela on this theme to make awareness among the stakeholders.

Objectives of Kisan Mela

Agricultural Universities and Research Institutes were established in India with the major objective of showcasing agricultural education, research and extension of agricultural technologies among the farmers. Towards fulfilment of this objective, Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Bihar organizes an annual Kisan Mela in the premises of the University for a successful interface event involving Scientists, Producers, Service Providers and Farmers. In the year 2025, this is being organized during 15-17 February on the theme of "Towards Vikshit Bharat through Climate Resilient Agriculture".

Main Attractions of Kisan Mela

- ❖ Dissemination of agri-based and allied skills.
- ❖ Dissemination of knowledge & exhibition of agricultural technologies.
- ❖ Horticultural & Animal/Bird Show.
- ❖ Soil testing facilities.
- ❖ Plant health clinic.
- ❖ Demonstration of digital agricultural technologies.
- ❖ Dissemination of climate resilient agricultural interventions.
- ❖ Exhibition by Producers, Service Providers, Financial Agencies and Banks in Agricultural sectors.

- ❖ Exhibition of various food products, millets, flowers, fruits, value added items etc.
- ❖ Organization of Quiz/Cultural Programmes.
- ❖ Discussion on contemporary farming/allied issues.
- ❖ Prizes for best exhibits of Farmers stall.
- ❖ Discussion on the use of Drone technology in agriculture, micro-irrigation system along with demonstration of Drone.
- ❖ Sale of Seed, Machinery, University Publication and other components of agriculture.
- ❖ Exhibition of various states including producers of agricultural implements/machines, various agricultural services and other Govt. Bodies including that of Bihar.

Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa

Established in the birth place of Agriculture Research & Education and named after the first president of India late Dr. Rajendra Prasad, our university has contributed a lot to Agriculture Education, Research & Extension. The university is always ready to extend its full supports to the development of agriculture & allied sector targeting the development of farmers.

Facilities available in the stall for exhibitors

- ❖ There shall be 2 tables, 2 chairs with supply of electricity points in the stall.
- ❖ The university has full right to change make concession and relief of the rates quoted for stalls.

Stall

The following type of stall will be provided by university during mela:

Three side covered stall

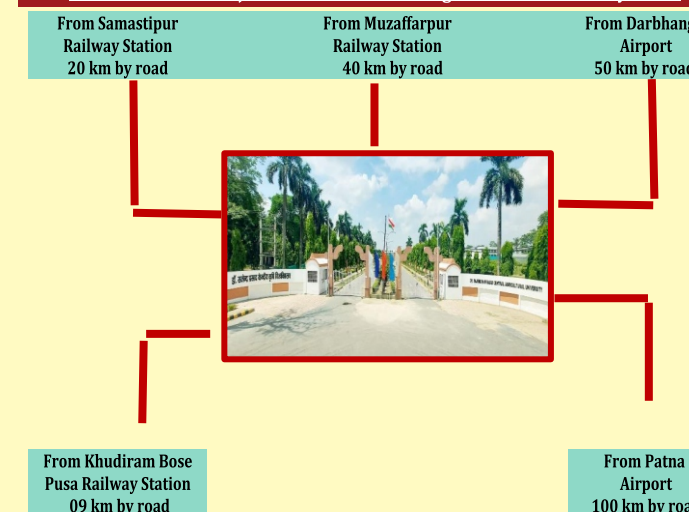
Size 15'X12'X10', Rate Rs. 8,000.00 (Eight Thousand) only.

Advertisements can be sent in both English and Hindi as well as soft copy in ready to print format. The payment should be made in the name of "Kisan Mela-RPCA, Pusa", Punjab National Bank, DRPCA, Pusa. A/C No.-45120001000027244 (IFSC Code: PUNB0451200) through Cash/DD/UPI. After paying the amount, please inform on e-mail: amit @rpcau.ac.in; dee@rpcau.ac.in; ratnesh@rpcau.ac.in

Advertisement size and Rates for Souvenir

| Sl. No. | Size | Rate (Rs.) |
|---------|----------------------------|---------------|
| 1. | Backside Full Colored Page | - 1,00,000.00 |
| 2. | Inside Cover Colored Page | - 75,000.00 |
| 3. | Half Colored Page | - 50,000.00 |
| 4. | Quarter size colour Page | - 25,000.00 |

How to reach Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa.



SCAN & PAY
UPI ID: 9431632966@pnb
BHIM UPI
Pay at (Bharat) using any UPI app
Toll-free: 180018001800821

Contact details

Dr. Ratnesh Kumar Jha
Professor (Agronomy), DoEE
Organizing Secretary
Mobile No.- 9430804115

Dr. Mayank Rai
Director Extension Education
RPCAU, Pusa
Mobile- 9436336008
E-mail- dee@rpcau.ac.in

Dr. R. K. Tiwari
Sr. Scientist & Head, KVK, Birauli
Co-organizing Secretary
Mobile No.- 7295046855

Dr. M. L. Meena
Sr. Scientist & Head, KVK, Turki
Co-organizing Secretary
Mobile No.- 9414856397

Dr. Bineeta Satpathy
Assoc. Prof., DoEE
Co-organizing Secretary
Mobile No.- 7978505027

Dr. Phool Chand
Assoc. Prof., DoEE
Co-organizing Secretary
Mobile No.- 9661450698